14–5–67 ओमशांति रात्रीक्लास

अक्सर करके बच्चे भाषण करने जाते हैं किसी ना किसी टॉपिक पर। आजकल तो खास विश्व में शांति कैसे स्थापित हो उस पर चलता है। अब दुनियां तो जानती नहीं है कि विश्व पर शांति भगवान बाप ही स्थापन कर रहे हैं। उनको जानते ही नहीं। सर्वव्यापी भित्तर–ठिक्कर में कह देते हैं। .....यही हैं कि दुनियां में अशांति है। अब विश्व में शांति कैसे हो?इसलिए पीस प्राइज भी बहुतों को मिलता है। तुम बच्चों को भाषण में यह समझाना है कि विश्व पर शांति कैसे हो। उनकी बुद्धि में है कि यह जो इतने धर्म हैं वो सब आपस में मिलकर एक हा जावे। अब सभी धर्म मिलकर एक तो होते नहीं हैं। हां, यह हो सकता है कि एक धर्म ही हों। इन बातों को तुम बच्चे ही समझ सकते हो। तुम्हारे में भी कोई2 भाषण लायक है। बोलो सभी यह चाहते हैं कि विश्व में शांति कैसे हो?क्योंकि अशांति में दुःख ,शांति में सुख होता है। मनुष्य चाहते हैं कि सुख–शांति हो। एक है शांतिधाम, दूसरा फिर है सुखधाम और दुःखधाम। हम जो ब्र.कु.कु. हैं वो हैं ही प्रजापिता ब्रह्मा की संतान। ब्रह्मा वल्द शिवबाबा। ब्रह्मा शिवबाबा का बच्चा है। उंच ते उंच शिवबाबा की महिमा करनी है। सभी आत्माओं का वो बाप है। सब आत्मायें ब्रदर्स हैं। आत्माओं के रहने का स्थान है ही शांतिधाम। यहां शरीर धारण कर पार्ट बजाते हैं। आत्मा अलग हो जावे तो पार्ट नहीं बज सकेगा। घर है ही शांतिधाम। अब एक तो शांतिधाम वो है। यहां है अशांति। करोड़ों मनुष्य हैं। लड़ाई–झगड़ा बहुत है। दूसरी शांति होती है स्वर्ग में। जबकि धर्म ही एक रहता है। भारत में सुखधाम था। आत्मायें सब शांतिधाम में रहती थीं। जब देवताओं का राज्य था तो सुख था। शांति–सुख, सम्पत्ति थी। 5000वर्ष की बात है जबकि भारत हैविन था। ल.ना. का राज्य था। दूसरा कोई राज्य नहीं था। याद करो कि बरोबर ऐसा था ना। पहले2 पूछना चाहिए कि बरोबर एक धर्म था। पवित्रता भी थी, सुख–शांति थी। अथाह धन था। फिर जब भक्ति मार्ग शुरू हुआ है तो मंदिर बनाया है सोमनाथ का। भारत कितना साहुकार था। सोने के महल थे। और तो कोई धर्म था ही नहीं। तुम्हारे दिल में जो है वो और कोई के दिल में नहीं है। पीस ,प्रासपर्टी,प्योरिटी थी। मनुष्य भी थोड़े से थे। अथाह सम्पत्ति थी। और वो है शांतिधाम जहां से ही हम आत्मायें आती है। शांतिधाम फिर सुखधाम। अब है कलियुग दुःखधाम। अनेक धर्म हो गये हैं। सतयुग के बाद है त्रेता। वहां पर रामराज्य था। द्वापर में फिर देवतायें वाममार्ग में चले जाते हैं। और धर्म आते हैं। सतयुग में पवित्रता ,सुख–शांति,सम्पत्ति सब कुछ था। सुखधाम था ना। फिर दुःखधाम हुआ। फिर भी सुखधाम जरूर आना चाहिए। पहले शांतिधाम जाना पड़े। पतित आत्मायें तो जा नहीं सकतीं। गाते भी हैं कि हे पतित–पावन आओ। बाप कहते हैं कि तुम पावन थे। फिर तुम पतित बने हो। आत्मा में खाद पड़ी है। आत्मा जो ही ....सोना थी वो ही अब इम्प्योर बन गई है। फिर प्योर कैसे बने?गंगा स्नान से तो नहीं बनेगी। एवर प्योर जो पतित–पावन बाप है उनको ही आना पड़ता है। बाप कहते हैं कि मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर तुम आकर स्वर्ग का राज्य करेंगे। भारत में जब स्वर्ग था तो थोड़े मनुष्य थे। अब हैं 500करोड़। इस समय अशांति, दुःख भी है। इनको स्वर्ग का मालिक किसने बनाया?शिव तो बेहद का बाप है। सर्व का सदगति दाता है। गाइड बनकर सबको ले जाते हैं। सबका हिसाब–किताब चुक्तू होता है। यह है ही पुरुषोत्तम संगमयुग। भारत जो सिरताज था अब सबसे नीच बन गया है। फिर बाप उंच बनाने आये हैं। यह महाभारत लड़ाई पहले भी लगी थी। उससे ही स्वर्ग के गेट खुले थे। ब्रह्मा द्वारा बाप पढ़ा रहे हैं। कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारी आत्मा प्योर बनकर उड़ने लग पड़ेगी। पतित आत्मा कोई वापस जा नहीं सकती है। बाप ही आकर सबको वापस ले जाते हैं। सतयुग में थोड़े होते हैं। यहां पर बहुत हैं। तो जरूर विनाश होगा।

शांति का सागर बाप ही है। वो ही शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। वो हम आत्माओं का बाप है। फिर ब्रह्मा कुमार कुमारियां तो हम पोत्रे ठहरे। ब्रह्मा द्वारा हमको समझाते हैं कि शांति और सुख मैं ही स्थापना करता हूँ। अभी तो भारतवासी भी दुःखी हैं। धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट भी हैं। वो ही पवित्र प्रवृत्ति मार्ग अपवित्र बन गया है। फिर बाप धर्म श्रेष्ठ, कर्म श्रेष्ठ बना रहे हैं। शांति का सागर सुख का सागर वो है। सबका पार्ट अपना2 है। यहां भी हर एक का मर्तबा अपना2 है। अभी एक धर्म की स्थापना हो रही है। अनेक धर्मों के विनाश के लिए यह महाभारत लड़ाई जरूर लगनी है। हम रचता और रचना को जान गये हैं। पहले2 महिम बाप की करनी चाहिए। 5000वर्ष पहले विश्व में शांति थी। हम श्रीमत पर भारत की तन,मन,धन से सेवा कर रहे हैं। सच्ची2 पीस, प्रासपर्टी हमको मिलती है। प्योरिटी है तो पीस, प्रासपर्टी भी है। यह स्थापना करना बाप ही का काम है। पतित मनुष्य कर नहीं सकता। फाल्तू माथा मारते2 सीढ़ी उतरते ही जाते हैं। तो ऐसे2 विचार, सागर, मंथन कर फिर भाषण करना चाहिए। विश्व में शांति बाप ही स्थापन करते हैं। सीढ़ी भी ले जानी चाहिए। त्रिमूर्ति झाड़ भी। नहीं तो ओरली भाषण करना चाहिए। मूल बात है ही भगवानोवाच्य। कृष्ण को भगवान कहना रांग है। भगवान परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है। उसने ब्रह्मा द्वारा ही ज्ञान यज्ञ रचा है। हम राजयोगी हैं। वो हैं हठयोगी। सबका सदगति दाता एक ही बाप है। बाप कहते हैं कि मैं सब साधुओं का भी उद्धार करता हूँ। 20मिनट में बहुत ही भाषण कर सकते हैं। पहले2 परिचय बाप का देना है। विश्व में शांति थी ना। भारत स्वर्ग था। पवित्रता सुख—शांति सब था। अब नर्क है। इसको वैश्यालय नर्क कहा जाता है। भारत ही शिवालय था। शिव ने स्थापन किया था। अब वैश्यालय है। शिवालय शिव स्थापन करते हैं। वैश्यालय रावण स्थापन करते हैं। जिस रावण को तुम जलाते हो। हम हैं संगमयुगी। तुम हो कलियुगी। हम जानते हैं कि अब यह सारा खलास होना है। हम राजयोग सीख रहे हैं। विश्व में शांति थी ना। 5000वर्ष की बात है। ज्ञान सागर बाप ही ज्ञान सुनाते हैं। बाकी सब है भक्ति की अथॉरिटी। ज्ञान की अथॉरिटी बाप ही है। ज्ञान ..है सुख। भक्ति से है दुःख। ऐसे2 समझाना चाहिए। मंदिर बनाने वाले शिव की पूजा करने वाले सब भक्त हैं ना। पुजारी को कब पूज्य कह नहीं सकते। पूज्य शंकराचार्य कहेंगे क्या?पूज्य नहीं है तो फिर उनको माथा क्यों टेकते हो?तुम छोटी2 बच्चियां इस शंकराचार्य के पास जा सकती हो। देखो कल सुनाया ना कि पुरी वाले शंकराचार्य ने कहा कि हिंदुओं को भी 4/5 शादी करनी चाहिए। बहुत बच्चे पैदा करने चाहिए। अब यह मैडचैप नहीं है। नानसेंस लिखी हुई है। द्रौपदी को पांच पति दिखाते हैं तो अब पतियों को पांच पत्नियां होनी चाहिए। तुमको ठोकना चाहिए। इस शंकराचार्य ने बहुत भूख हड़ताल आदि की है। तो दिमाग खराब हो गया है क्या?तुम बच्चों को बहुत नशा होना चाहिए। शंकराचार्य लिखते हैं कि बच्चे बहुत पैदा होने चाहिए। पहले2 तो खुद शादी करे। बाप कहते हैं कि शास्त्र आदि जो भी पढ़े हैं वो सब बिसारो। तुमसे कोई पूछे कि तुम शास्त्रों को नहीं मानते हा?बोलो मानेंगे क्यों नहीं?यह भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। भक्त (तो) सब हैं। भक्ति का मार्ग ही अलग है। ज्ञान मार्ग ही अलग है। भक्ति से दुर्गति ,ज्ञान से सदगति होती है। अब हमारी सदगति करने वाला बाप आया हुआ है। इसलिए ही हम भक्ति अब नहीं करते हैं। ज्ञान मिला तो भी फिर भक्ति क्यों करेंगे?भक्ति का फल भगवान देते हैं ना। तुम गाते भी हो कि ज्ञान भक्ति और वैराग। बाप नई दुनियां में ले जाते हैं। जहां पर भक्ति होती ही नहीं है। हमको ज्ञान सुनाने वाला बाप है। लिखा हुआ भी है ज्ञान सागर पतित—पावन गीता ज्ञान दाता ,शिवपरमात्मावाच्य। वो फिर कह देते शिव परमात्मा वा श्रीकृष्ण एक ही है। अरे ,सबकी पोजीशन अलग2 है। कह देते हैं कि सब ईश्वर के रूप हैं। परमात्मा खुद ही विकार करते हैं, बहलते हैं। ऐसी बातें जहां सुनते हैं उनको कह देते हैं सतसंग। बाप कहते हैं सतसंग एक ही है। बाकी सब है लतसंग। पतित दुनियां में एक भी पावन नहीं है। पावन दुनियां में एक भी पतित हो नहीं सकता। बाकी सब है भक्तिमार्ग। जन्म तो भ्रष्टाचार से ही लेंगे ना। देवताओं के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। गुडनाइट।